4.23 गरिमा की कहानी
“घर पर पढाई का रूपान्तरण”

राजस्थान के झालावाड़ जिले के अकलेरा ब्लॉक में स्थित अरनिया गांव मे गरिमा नाम की लड़की रहती है। गरिमा वर्तमान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कक्षा 5 में अध्ययन कर रही है। गरिमा की परिवर्तन की यात्रा द्वढ़ता और सही अवसरो की शक्ति का प्रमाण है। यह कहानी है कि कैसे माइडंस्पार्क कार्यक्रम उनके जीवन में उल्लेखनीय बदलाव लाया।

तीन भाई बहनो में सबसे बड़ी गरिमा का परिवार साधारण परिवार से आता है, उनके माता - पिता खेती का कार्य करते है। परिवार की मासिक आय रू 7000 सें रू 10000 के बीच है जो उनकी बुनियादी जरूरतो को पूरा करने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त है।

गरिमा का मन पढ़ाई में बिल्कुल नही लगता था और उसे स्कूल जाना भी पसन्द नही था, लेकिन जब माइंडस्पार्क टीम ने पहली बार गरिमा के माता पिता को माइंडस्पार्क कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी तो उन्हे इस कार्यक्रम की उपयोगिता को जानकर अच्छा लगा और उन्होने बेटी का नामांकन माइडस्पार्क कक्षा में करवाया।

नांमाकंन के बावजूद एक महत्तवपूर्ण बाधा थी

गरिमा के परिवार के पास स्मार्टफोन नही था। इस कारण परियोजना टीम से सुजान ने गरिमा के घर पर माइंड स्पार्क क्लास में शिक्षण कार्य करवाना शुरू किया,गरिमा ने नियमित रूप से शिक्षण कार्य करना शुरू किया जब उनके माता पिता ने देखा कि वह माइंड स्पार्क क्लास पढने में बहुत रूचि ले रही है इस वजह से उनके माता पिता ने मोबाइल खरीदने के बारे में विचार किया, शिक्षा के प्रति बढ़ते समर्पण को देखते हुए उसके पिता ने मोबाइल खरीदा जिससे गरिमा ने अपने घर पर माइंड स्पार्क सत्रों मे भाग लिया।

नया स्मार्टफोन आने के बाद गरिमा ने माइंड स्पार्क को हर दिन 1 से 2 घंटे शिक्षण कार्य करना शुरू कर दिया। माइंड स्पार्क शुरू करने से पहले, गरिमा तीसरी कक्षा में पढ़ती थी उस समय उसे अपने सीखने की यात्रा में महत्तवपूर्ण चुनौतियो का सामना करना पड़ा। वह बुनियादी साक्षरता और अंकगणित कौशल के साथ संघर्ष करती थी यहां तक कि वह अपना नाम भी नही लिख पाती थी व सरल हिन्दी कहानियां भी नही पढ़ पाती थी।

माइंडस्पार्क सत्रो में प्रतिदिन भाग लेकर, गरिमा ने धीरे धीरे अपना नाम लिखना सीखा और अक्षर व संख्याए बनाना शुरू कर दिया जो कभी उसे भ्रमित करती थी। मांइडस्पार्क के व्यक्तिगत दृष्टिकोण ने उसे अपनी गति से आगे बढ़ने की अनुमति दी, धीरे धीरे हिन्दी और गणित में अपने कौशल का निर्माण किया। गरिमा अब 5वी कक्षा में आत्मविश्वाश से हिंदी में कहानियां पढ़ रही है और गणित की ऐसी समस्याएं हल करती है जो कभी उसे असम्भव लगती थी।

गरिमा की मां जो कभी उसके स्कूल न जाने सें चितिंत रहती थी, अब गर्व से उसे पढाई करते हुए देखती है। उसके शिक्षकों ने भी उसकी पढाई में भी काफी सुधार देखा है और उसकी दृढ संकल्प की प्रशंशा की है।

इस वर्ष गरिमा ने 22799 मिनट शिक्षण कार्य किया है जिसके फलस्वरूप उनको एकल जन सेवा संस्थान के स्थापना दिवस पर संस्था द्वारा उत्साहवर्धन हेतु मोबाइल टेबलेट पुरूस्कार स्वरूप दिया गया। इस मान्यता ने उसे और भी प्रेरित किया जिससे उसके जीवन में शिक्षा का महत्तव और भी बढ गया है।

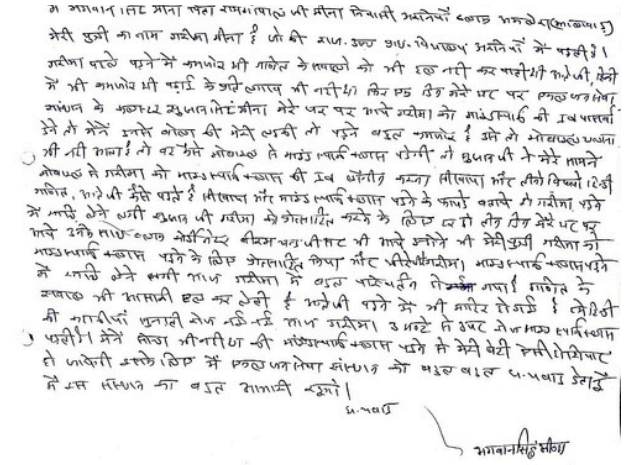

भगवानसिंह मीणा

Scanned with OKEN Scanner